महाकवि कालिदास का परिचय

महर्षि वाल्मीकि एवं महर्षि वेदव्यास के पश्चात् जिस महाकवि ने भारतीय साहित्य और चेतना पर दूर तक अमिट छाप छोड़ी है, वह कालिदास हैं। कम ही कवि ऐसे होते हैं जिन्हें किसी राष्ट्र की समूची सांस्कृतिक चेतना को मुखरित करने की कला पर अधिकार होता है। कालिदास ऐसे ही कवि हैं। भारतवर्ष के ऋषियों, सन्तों, कलाकारों और राजपुरुषों और विचारकों ने जो कुछ उत्तम और महान् दिया है, उसके सहस्त्रों वर्ष के इतिहास का जो कुछ सौन्दर्य है, उसने मनुष्य को पशु-सुलभ धरातल से उठाकर देवत्व में प्रतिष्ठित करने की जितनी विधियों का संधान किया है उन सब को ललित-मोहन और सशक्त वाणी देने का काम कालिदास ने किया है। सम्पूर्ण भारतीय मनीषा ने कालिदास की इस महिमा को स्वीकारा है और उन्हें राष्ट्रीय कवि की उपाधि से सम्मानित किया है।

सैकड़ों वर्षों तक उनकी ललित-गहन कविता ने आनन्द और प्रेरणा दी है। वाल्मीकि और व्यास की भांति उनकी कविता ने भी महनीय और उदात्त चरित्रों की सृष्टि की है। जहां भी कालिदास की तत्वान्वेषिणी दृष्टि गई है वहीं उसने जीवन के किसी न किसी अदृष्ट पक्ष को उद्घाटित किया है। साहित्य और चिंतन की इतनी बड़ी विरासत के साथ न्याय करने की क्षमता हर किसी कवि में नहीं होती और यदि कालिदास यह कर सके तो यह उनकी अर्थग्राहिका शक्ति और मर्मभेदिनी दृष्टि का

परिचायक है। परन्तु जिस कवि ने भारत की अन्तरात्मा को वाणी दी, वे अपने जीवन के विषय में सर्वथा मौन है। यही कारण है कि उनकी स्थिति-काल, जन्म-स्थान तथा व्यक्तिगत जीवन को लेकर बड़ा मत-वैभिन्न्य है। उनकी रचनाओं के अनुशीलन करने के पश्चात् हम इतना ही जान पाते हैं कि वे ऐसे युग में हुए जबकि देश में शान्ति और समृद्धि विद्यमान थी। विद्वानों के अनुसार उज्जैन के सम्राट् वीर विक्रमादित्य उनके आश्रयदाता थे और वे स्वयं भगवान् शिव के अनन्य भक्त थे। परम्परा से उनके विषय में यह जनश्रुति चली आ रही है कि वे विदेशी हूण आक्रमणकारियों पर विजय प्राप्त करने के उपलक्ष्य में ईसवी सन से 57 साल पूर्व में अपने नाम से विक्रम संवत्सर का प्रवर्तन करने वाले सम्राट् विक्रमादित्य की राज्य सभा के नवरत्नों में से एक थे। कथा-सरित्सागर के अनुसार विक्रमादित्य और उनके पिता महेन्द्रादित्य दोनों ही भगवान् शिव के परमभक्त थे। महाकवि कालिदास भी शिवभक्त थे। इस आधार पर कालिदास का समय ईसवी पूर्व प्रथम शताब्दी ही स्वीकृत होता है। इसके विपरीत अन्य विद्वानों की धारणा है कि महाकवि कालिदास भारतीय इतिहास के स्वर्णिम युग में अर्थात् गुप्त शासकों के काल (320 ई.-510 ई.) में हुए। जैसा कि कालिदास के विषय में प्रसिद्ध है वे ऐन्द्रिय विषयों, कलात्मक सौन्दर्य एवं भोगयुक्त भावनाओं के मर्मज्ञ सर्वोत्कृष्ट कवि थे अतः हो सकता है कि वे ऐश्वर्य-प्रधान गुप्तयुग की देन हों। गुप्तकाल प्राचीन भारतीय इतिहास में चरम भौतिक उन्नति तथा वैभव का काल माना जाता है। कालिदास के विषय में कहा जाता है कि उन्होंने 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण करने वाले

चन्द्रगुप्त द्वितीय (375-415 ई.) के उत्तरकालिक समय में अपना साहित्यिक जीवन प्रारम्भ किया, कुमारगुप्त प्रथम के वे समकालीन रहे तथा स्कन्दगुप्त के शासन काल में भी कुछ समय तक उनकी साहित्य साधना चलती रही। इस प्रकार वे तीन प्रख्यात गुप्त शासकों: चन्द्रगुप्त द्वितीय, कुमार गुप्त और स्कन्दगुप्त-की राजसभा में रहे। अतएव उन्हें भारतीय चेतना एवं समृद्धि के सुवर्ण युग से सम्बद्ध माना जाता है। कालिदास के विषय में विद्वानों के इन विभिन्न विचारों और मतों को देखते हुए कालिदास का कोई निश्चित समय ज्ञात कर पाना वस्तुत: बहुत कठिन है। ईसवी सन् 634 के 'ऐहोल' शिलालेख में कालिदास के नाम का उल्लेख मिलता है तथा ईसवी सन् 472 के लिखे वत्सभट्टि के मन्दसौर शिलालेख के कुछ पद्य तो कालिदास के ऋतुसंहार तथा मेघदूत खंडकाव्यों के पद्यों का अनुकरण मात्र प्रतीत होते हैं। इन साक्ष्यों से स्पष्ट है कि कालिदास के काल की परवर्ती सीमा ईसवी सन् की पांचवी शताब्दी से पीछे नहीं ले जायी जा सकती। इसके अतिरिक्त कालिदास ने भास को अपना पूर्वनाटककार माना है और अपनी रचनाओं में उसके नाम का विशेष रूप से उल्लेख किया है। अत: कालिदास नाटककार भास (ई. पूर्व तृतीय-चतुर्थ शताब्दी) से परवर्ती बैठते हैं। कालिदास का काव्य महाकवि अश्वघोष के काव्य से बहुत मिलता-जुलता है और अश्वघोष का काल निश्चित रूप से ईसा की प्रथम शताब्दी माना गया है, क्योंकि वे राजा कनिष्क (प्रथम शताब्दी ई.) के समकालीन थे। विद्वानों का अधिकतर झुकाव कालिदास को अश्वघोष का परवर्ती मानने का है, परन्तु ठोस प्रमाणों के अभाव में कालिदास का काल अनिश्चित ही है।